पिंजरे की उड़ान और यशपाल

अपराजिता कुमारी

'पिंजरें की उड़ान' यशपाल का प्रथम कहानी–संग्रह है। इस संग्रह में कुल बीस कहानियां संग्रहित हैं–मक्रील, नीरस रसिक, हिंसा, समाज–सेवा, प्रेम का सार, पहाड़ की स्मृति, पीर का मजार, दुखी–दुखी, भावुक, मृत्युंजय, शर्त्त?, तीसरी चिता, प्रायश्चित, हृदय, परायी, मजहब, कर्मफल, दर्पण, परलोक, दुख। इन कहानियों का सृजन लेखक ने अपने जेल–जीवन के दौरान किया है। स्वयं लेखके के शब्दों में 'पिंजरा प्रतीक है–जेल का।' इस संग्रह की अधिकांश कहानियां जेल में लिखी थीं। उड़ान से अभिप्राय था–'अतीत स्मृतियां और उसके आधार पर कल्पनाएं।' यशपाल यह मानते हैं कि ''हमारी कल्पना का आधार जीवन की ठोस वास्तविकताएं ही होती हैं इसीलिए कथा–कहानी के रूप में कल्पना का महत्व है।